thearyasamaj.org

Date of Publication: 25 January 2015

कमल ज्योति

(मासिक पत्र)

वर्ष-8, अंक-11 फरवरी 2015 विक्रमी संवत् 2071 सृष्टि संवत् 1960853113 एक प्रति का मूल्य 10/-रुपये सहयोग राशि 1100/-रुपये

ओ३म्

संस्थापक

स्व. श्री भजनप्रकाश आर्य जी

संरक्षक

ओमप्रकाश हसीजा

प्रधान सम्पादक

आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री
चलभाष : 9810084806

सम्पादक

एल.आर. आहूजा
आचार्य शिव नारायण शास्त्री
अतुल आर्य
चलभाष : 9718194653
दूरभाष : 011-27017780

सहयोगी सम्पादक

प्रिंसीपल हर्ष आर्या
चलभाष : 9999114012
राजीव आर्य
चलभाष : 9212209044
नरेन्द्र आर्य 'सुमन'
चलभाष : 9213402628

तेरी ही शरण

नह्यंग नृतो त्वदन्यं विन्दामि राधसे।
राये द्युम्नाय शवसे च गिर्वणः॥

- ऋक्. 8/24/12

ऋषिः-**विश्वमना वैयश्वः॥** देवता-**इन्द्रः॥** छन्दः-**उष्णिक्॥**

शब्दार्थ- अंग=हाँ, **नृतः**=हे नाचनेवाले! **राधसे**=साधना-सिद्धि व सफलता के लिए मैं **त्वत्**=तुझसे **अन्यम्**=अन्य किसी को **नहि**=नहीं **विन्दामि**=पाता हूँ, **गिर्वणः**=हे वाणी से संभजनीय! **राये**=धन के लिए **द्युम्नाय**=तेज के लिए **च**=और **शवसे**=बल के लिए मैं और किसी को नहीं पाता हूँ।

विनय- हे नाचनेवाले! हे इन सब चराचर सृष्टियों को कठपुतलियों की तरह हिलानेवाले! मैं तुम्हारी शरण पड़ा हूँ। जब से मैंने अनुभव किया है कि इस गतिमय समस्त ब्रह्माण्ड को गति देनेवाले तुम हो, इस संसार में होनेवाले छोटे-से-छोटे और बड़े-से-बड़े कर्मों को प्रेरित करनेवाले तुम हो, तुम्हारी इच्छा के बिना इस संसार में घास का एक तिनका भी नहीं हिल सकता और तुम्हारी इच्छा होने पर एक पल में इस पृथिवी पर प्रलय आ सकता है, तब से मैं तुम्हारी शरण में आ पड़ा हूँ। मैं देखता हूँ कि तुम्हारी कृपा के बिना मैं कुछ नहीं पा सकता। इस संसार में तुम्हारे सिवाय और कोई नहीं है जो मुझे कोई सिद्धि व सफलता दिला सके। मुझे कोई नहीं दिखाई देता जो मेरे छोटे-से-छोटे अभीष्ट को सिद्ध कर सके। मेरी जीवन-साधना के तो एकमात्र तुम्हीं आधार हो, पर हे वाणियों से संभजनीय! मैं तो देखता हूँ कि यदि मैं धन पाना चाहूँ, तेज पाना चाहूँ, बल पाना चाहूँ या कुछ और पाना चाहूँ, इन सब वस्तुओं को भी दे सकनेवाला तुम्हारे सिवाय इस संसार में मेरे लिए और कोई नहीं है तो मैं और किसका आश्रय लूँ? मैं तो हे इन्द्र! तुम्हारी शरण पड़ा हूँ, सब जगह भटक-भटककर अब तुम्हारी शरण पड़ा हूँ।

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

सामवेद संहिता

–श्रीमती प्रकाशवती बुग्गा

उपो षु जातमप्तुरं गोभिर्भंगं परिष्कृतम्। इन्दु देवा अयासिषु॥
तमिद्वर्धन्तु नो गिरो वत्सं संशिश्वरीरिव। य इन्द्रस्य हृदं सनिः॥
अर्षा नः सोम शं गवे धुक्षस्व पिप्युषीमिषम्।
वर्धा समुद्रमुक्थ्य ॥852॥

भलीप्रकार जो गया बनाया, ज्ञान कर्म का दाता है।
उस आनन्दरस को साधक, स्तुतियों से अंगों में पाता है॥
प्रज्ञाशक्ति में जो भर जाता, उस आनन्द को पावें।
माता जैसे पुत्र को पालें, वाणी हमारी उसे बढ़ावें॥
हे सोम परम सुख देकर, इन्द्रियाँ बलवान कर।
हे पूज्य तू रस ला प्रेरणा से, अन्तःकरण उत्थान कर॥

आ घा ये अग्निमिन्धते स्तृणन्ति बर्हिरानुषक्।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥
बृहन्निदिध्म एषां भूरि शस्त्रं पृथुः स्वरूः। येषामिन्द्रो युवा सखा॥
अयुद्ध इद्युधा वृतं शूर आजति सत्वभिः।
येषामिन्द्रो युवा सखा ॥853॥

प्रकाशमयी प्रज्ञा जिनकी, तरूणा मित्र रहा करती।
संकल्प की अग्नि दिव्य शक्ति, उनके ही घट में भरती॥
दिव्य तरूणा प्रज्ञावाले का, तेज संकल्प महान है।
स्तुति के गायें गीत अनेकों, शक्ति से भरता प्राण है॥
दिव्य तरूण प्रज्ञा वाला, सात्विक बल वाला कहाता।
दुर्भावों के शत्रु दल को, वीर योद्धा बन मार भगाता॥

यह एक इद्विदयते वसु मर्ताय दाशुषे।
ईशानो अप्रतिष्कुत इन्द्रो अंग॥
यश्चिद्धि त्वा बहुभ्य आ सुतावाँ आविवासति।
उग्रं तत् पत्यते शव इन्द्रो अंग॥
कदा मर्तमराधसं पदा क्षुम्पमिव स्फुरत।
कदा नः शुश्रवद् गिर इन्द्रो अंग ॥854॥

हे शिष्य इन्द्र है सब का स्वामी, जीता कभी न जाता है।
समर्पण करने वाला साधक, इससे ही धन पाता है॥
हे शिष्य, सिद्ध प्रज्ञाशक्ति, उग्र तेज का दान करे।
जो भक्त साधना इस की करता, उसका नाम प्रधान करे॥
जो गीत गाना इन्द्र प्रभु के, सुनता उसकी याचना।
श्रुद्र पौधे सा कुचल दे, करता न जो आराधना॥

गायन्ति त्वा गायत्रिणोऽर्चन्त्यर्कमर्किणः ।
ब्रह्माणस्त्वा शतक्रत उद्वंशमिव येमिरे ॥
यत्सानोः सान्वारूहो भूर्यस्पष्ट कर्त्वम् ।
तदिन्द्रो अर्थ चेतति यूथेन वृष्णिरेजति ॥
युङ्क्ष्वा हि केशिना हरी वृषणा कक्ष्यप्रा ।
अथा न इन्द्र सोमपा गिरामुपश्रुति चर ॥855॥

ज्ञान विवेक दे कर्म कराता, भक्त उसे ही घ्याते हैं।
विद्वान् सदा झण्डे डण्डे सम, ऊँचा उसे उठाते हैं॥
साधक चित्त के शिखरों पर जो, ऊँचे कर्म किया करता।
इन्द्र ही सेना सहित आ, भक्तों को सुखवर्षा से भरता॥
हे आनन्दरस के पीने वाले, हमारी वाणियों पर ध्यान दे।
ज्ञान साधना करने वाली, इन्द्रियों को देहरथ में स्थान दे॥

सुषमिद्धो न आ वह देवां अग्ने हविष्मते। होतः पावकः यक्षि च॥
मधुमन्तं तनूनपाद्यज्ञं देवेषु नः कवे। अद्या कृणुह्यतये॥
नराशंसमिह प्रियमस्मिन्यज्ञ उप हये। मधुजिह्वं हविष्कृतम॥
अग्ने सुखतमे रथे देवां ईडित आ वह। असि होता मनुहितः॥856॥

हे ज्ञानरूप, संकल्परूप अग्ने, हम में त्याग का भाव जगा।
हे शोधक अग्ने साधक में, यज्ञभाव तू ही उपजा॥
हे रक्षक आधार हमारे, तू ही देता अन्तर्ज्ञान।
जीवन में उन्नति करने को, भर मधुर यज्ञभाव महान॥
जीवन यज्ञ को सफल बनाऊँ, बन प्रियवादी भक्त सुजान।
नर नर में व्यापक प्रशंसित, अग्नि का करूँ आह्वान॥
हे अग्ने तेरी साधना से, दिव्य गुणों पर करूं अधिकार।
आत्मिक यज्ञ कराने वाले, मनन शक्ति का तू आधार॥

यदद्य सूर उदितेऽनागा मित्रो अर्यमा। सुवाति सविता भगः॥
सुप्रावीरस्तु स क्षयः प्र नु यामन्त्सुदानवः। ये नो अंहोऽतिपिप्रति॥
उत स्वराजो अदितिरदब्धस्य व्रतस्य ये। महो राजान ईशते ॥857॥

आज ज्ञान कर्म का प्रेरक, उदय हुआ दिखलाता है।
दोषरहित भग मित्र अर्यमा, सविता शुभ गुणदाता है॥
रक्षा करे हमारी, आश्रय यह देनेवाला।
पापों को पार करे, धनलाभ देनेवाला॥
जो सतत साधना करते, व्रतधारी बन ज्योति जगाते।
सबके शासक बन रहते, अतुलित सुख सम्पत्ति पाते॥

उत्वा मदन्तु सोमाः कृणुष्व राधो अद्रिवः।
अव ब्रह्मद्विषो जहि॥
पदापणीनराधसो नि बाधस्व महाँ असि।
न हि त्वा कश्चन प्रति॥
त्वमीशिषे सुतानामिन्द्र त्वमसुतानाम्। त्वं राजा जनानाम् ॥858॥

हे अभेद्य शक्तिवाले, परमानन्द तुझे हर्षित करे।
आनन्द विनाशक भाव रहें न, ऐश्वर्य सब तुझ में भरे॥
हे प्रज्ञाशक्ति! विरोधी, भावनाएं नाश कर।
हे अनुपम शक्तिशाली, महानता प्रकाश कर॥
हे इन्द्र तू उत्पन्न करता, तू हो उन्हें धारण करे।
ज्ञान दृष्टि से तू स्वामी, प्रज्ञासों पर शासन करे॥

[क्रमशः]

thearyasamaj.org

गतांक से आगे

चिन्ता से चिन्तन और चिन्तन से चिरन्तन की ओर

–आचार्य चन्द्रशेखर शास्त्री

ध्यान का अभ्यास करने से पंचकोष विवेक होता है और मनुष्य को यह पता चलता है कि मृत्यु में केवल मेरा शरीर समाप्त होगा, मैं समाप्त नहीं होऊँगा।

वर्तमान काल में रहने से मनुष्य मृत्यु से निर्भय हो जाता है। हमारा मन अतीत काल की या भविष्य की बातें सोचता है। वर्तमान काल में मनुष्य कभी भी अपने आप को सुखी नहीं समझता। मृत्यु के समय हमारे पास केवल वर्तमान काल ही रह जाता है। अतीत काल छूट जाता है और भविष्य दिखाई नहीं देता। इसलिए मनुष्य भयभीत हो जाता है।

इटली में एक बार राजा ने अपने मन्त्री को फांसी की सजा दे दी। निश्चित कर दिया कि अमुक दिन शाम छः बजे फांसी होगी। उस मन्त्री को संगीत सुनने का बहुत शौक था। जिस दिन फांसी लगनी थी उस दिन उसने एक बहुत सहभोज दिया अपने सम्बन्धी और मित्रों को बुलाया और संगीत का आयोजन किया। राजा ने सोचा कि उस दिन मन्त्री बहुत बड़ा घबराया हुआ और परेशान होगा। चार बजे राजा उसको मिलने गया, मन्त्री संगीत सुनने में मस्त था। राजा ने उसे बुला कर कहा कि छः बजे तुम्हें फांसी होनी है और तुम्हें इसकी ज़रा भी चिन्ता नहीं है। मन्त्री ने कहा कि अभी तो दो घण्टे बाकी है छः बजे तक मुझे संगीत सुनने दो, छः बजे मुझे बुला लेना। राजा ने देखा कि इस व्यक्ति को मृत्यु से जरा भी भय नहीं है-राजा ने उसकी सजा रद्द कर दी। उपनिषदों में आया है उपाध्यायो वैमृत्युः अर्थात् गुरु मृत्यु है, गुरु अतीत से छुड़ा कर वर्तमान में लाता था मृत्यु भी यही करती है। आज के गुरु अतीत से चिपकाते हैं।

बचपन से मृत्यु को बुरा समझते हैं, इसलिए मृत्यु से भय लगता है। मृत्यु भय ऐसा है जैसे अनिद्रा का रोगी रात्रि से डरता है।

साक्षी चैतन्य जागृत करने से मनुष्य को पता चलता है कि मैं कौन हूँ? इससे पता चलता है कि मैं शरीर नहीं हूँ। वह मृत्यु के भय से मुक्त हो जाता है। सिकन्दर जब भारत पर आक्रमण करने आया तो आते समय उसके गुरु ने कहा कि भारत से लौटते समय किसी सन्यासी को ढूँढ कर लाना। सैनिकों ने एक सन्यासी को ढूँढा और कहा कि हमारे साथ चलो। सन्यासी ने उसके साथ जाने से इन्कार कर दिया। तब सिकन्दर खुद तलवार लेकर आया और उस दण्डी स्वामी को कहा कि यदि मेरे साथ नहीं चलोगे तो मैं तलवार से तुम्हारा सिर अलग कर दूँगा। दण्डी स्वामी ने हँसते हुए उसे कहा कि क्या बच्चों वाली बातें करता है। जैसे तू मेरे सिर को गिरता हुआ देखेगा, वैसे मैं भी अपने सिर को गिरता हुआ देखूंगा। यह सुनकर सिकन्दर बहुत शर्मिन्दा हुआ और चला गया।

इस प्रकार जो व्यक्ति मृत्यु को ज्ञान जाते हैं, वे मृत्यु से मजाक करते हैं। जापान में एक झेन फकीर मरते समय आसन लगाकर बैठ गया ओर शिष्यों को कहा कि लोग तो लेट कर मरते हैं, मैं बैठ कर मरूँगा। उसके एक शिष्य ने कहा कि मैने एक व्यक्ति के बारे में सुना है कि वह बैठे-बैठे मरा।

तब उस फकीर ने खड़े होकर कहा कि मैं खड़ा होकर मरूंगा। उसके एक शिष्य ने कहा कि मैंने एक व्यक्ति के बारे में सुना है कि वह खड़े-खड़े मरा था। तब उस फकीर ने कहा कि मैं शीर्ष आसन में मरूँगा। वह शीर्षासन लगा कर स्तब्ध हो गया। उसके शिष्य यह निर्णय न कर सके कि अभी वह मजाक कर रहा है या उसने प्राण छोड़ दिये हैं। वे उसकी बहन को बुलाकर लाये, उसकी बहन ने कहा कि जीवन भर मजाक करते रहे हो मरते समय तो मजाक छोड़ो। मरना है तो ठीक ढंग से मरो। यह सुनकर वह फकीर सीधा खड़ा हो गया। ओर उसने कहा कि मैं ठीक ढंग से मरता हूँ और लेट कर अपने प्राण छोड़ दिये।

मनोवैज्ञानिकों को कहना है कि यदि शमशान घाट शहर के बीच में हो तो हर व्यक्ति रोज मरे हुए लोगों को देखेगा। उसके लिए मृत्यु एक सामान्य बात हो जायेगी और अपने मृत्यु के समय भी वह भयभीत नहीं होगा।

तीन माह तक शमशान में रहने से भी मृत्यु भय दूर होता है। महात्मा बुद्ध अपने शिष्यों को तीन माह तक शमशान घाट पर रहने का आदेश देते थे।

अपने आपको प्रकृति का हिस्सा समझो, जैसे पर्वत से कोई शिला टूट कर गिरती है। वैसे ही मनुष्य इस संसार में अपने शरीर को मृत्यु के समय गिरता हुआ देखे।

चीन के दार्शनिक लाओत्से एक वृक्ष के नीचे बैठे हुये थे। हवा चली और एक सूखा पत्ता वृक्ष से टूट कर गिरा और उड़ने लग गया। इसी बात से उन्हें सत्य का ज्ञान हो गया। (मनुष्य भी इसी प्रकार प्रकृति का अंग है।

इसी सम्बन्ध में ऋषि दयानन्द के अन्तिम शब्द विचारणीय है कि "हे ईश्वर! तेरी इच्छा पूर्ण हो।"

पुनर्जन्म पर ध्यान देने से मृत्युभय दूर होता है। यह मत सोचिए कि मैं मर रहा हूँ अपितु यह सोचिये कि मेरा दूसरा जन्म होने वाला है।

thearyasamaj.org

क्रांतिवीर सुभाष चन्द्र बोस

- सुरेन्द्र कुमार अरोड़ा

खिला-खिला घर आंगन हो, माँ की ममता का बंधन हो,
पिता की महिमा का शासन हो, कौन क्रांति की बात करेगा?

वह सुभाष था, क्रांतिवीर था, वह अंग्रेजों से क्रोधित था।
घर की चौखट रास न आयी, पिता की समृद्धि भी बांध न पायी।

परतंत्र देश का चिंतन हर क्षण, चिन्तित करता मिट्टी का कण-कण।
अंग्रेजों की गुलामी सही न जाती, सुविधा कहीं भी बांध न पाती।

छोड़ दिया उसने अपना घर, अपनाया था जिसने बदी घर।
वह सुभाष था, क्रांतिवीर था, अंग्रेजों से वह क्रोधित था।

संकल्प राष्ट्र स्वतन्त्र कराना, देश की सेवा में मिट जाना।
खुद को सुलाकर, सबको जगाना, त्याग-तपस्या को पहचाना।

बलिदानों का बिगुल बजाना निज कीमत पर, औरो को उठाना।
आजादी का पाठ पढ़ाया, जिसने देश को जीना सिखाया।

वह सुभाष था, क्रांतिवीर था, अंग्रेजो से वह क्रोधित था

बांग्ला निज भाषा थी उसकी, पर हिन्दी को अपनाया उसने,
राष्ट्र चेतना थी करनी जागृत, अंग्रेजी को ठुकराया उसने।

राष्ट्रवाद ही है विकल्प, हिन्दी-हिन्दु-हिन्दुस्तान,
नेता जी का आह्वान, हिन्दी से राष्ट्रीय पहचान।

है दुर्गा शक्ति की देवी माँ, पुष्पों से न उसका अर्चन करूं,
दो शस्त्र मुझे रणभेरी का, निज रक्त उसे मैं अर्पण करूं।

जो मद है रास विलासों में, स्वतन्त्रता उन्हें दुत्कार रही,
अब अस्त्रों की भाषा बोला करो, भारत माँ पुकार रही।

तुम मुझे संकल्प दो, मैं तुम्हें विकल्प दूंगा,
तुम मुझे तप दो, मैं तुम्हें समृद्धि दूंगा।

तुम मुझे बलिदान दो, मैं तुम्हें सम्मान दूंगा,
तुम मुझे खून दो, मैं तुम्हें आजादी दूंगा।

यह मूल मन्त्र था उस राष्ट्रवीर का,
यह चूल तंत्र था उस परमवीर का।
वह सुभाष था, क्रांतिवीर था, अंग्रेजों से वह क्रोधित था

हे राष्ट्र प्रणेता, राष्ट्र पुरुष तुमको मैं नमन् शतबार करूं।
तू जन्म दे हिन्द की धरती पर, हर बार मैं ईश से मांग धरूं।

जय हिन्द का जय-जय घोष तेरा, हो अन्तिम ध्येय अरदासी में।
तेरी काया संचय हो, हिन्द के हर-इक वासी में।

श्रद्धांजलि

- पूनम नांगिया

जिस माँ ने हमें पैदा किया
खिलाया था अपनी गोद में
अपने मर्म सीने से लगा
लुटाया था जहाँ भर का प्यार
वो माँ आज हमें छोड़ गई
मगर सदा रहेगी मन में
वो प्यारी सी तस्वीर
कभी बहाऊँगी आँसू उसकी याद में
तो कभी हँस कर बात बताऊँगी
ऐसा कहती थी तुम वैसा करती थी तुम
माँ खास ही रौनक थी तुमसे
घर के हर कोने में था
इक भरा-भरा अहसास तुम्हारा
माँ के घर का तो नाम ही प्यारा
अभी भी महसूस होती रहेगी।
घर में फैली वो खुशबु तुम्हारी
यहाँ बैठी थी तुम वहाँ लेटी थी तुम
वो बातें तुम्हारी वो स्पर्श तुम्हारे
सदा ही दिल में रहेंगे हमारे।।

thearyasamaj.org

HONEY- THE DELICIOUS AMBROSIA

- Radha Krishan

Honey, indeed is a miracle food "endowed with pranic power and rejuvenating properties."

The Secret of Honey: In its manufacture both the agents, the plant and the animal kingdom are pressed into service. According to an expert "sugar (sucrose) is produced as food in the plants and carried in the cell cap for assimilation or for future use. There is a concentrated supply at the base of each flower for the proper growth of ovaries. Any excess of it is ejected and this is what the bees collect at the base of each flower along with pollen."

The collector bee fills its honey sac, which is an extension of oesophagus (gullet or head). This is where the nectar is subjected to a chemical change, altering it from sucrose. On returning to the hive, the bee regurgitates (brings back) the nectar and it is stored in the cells and processed by the workers until it is ripened into honey which takes about two weeks.

Ingredients of Honey: The most important thing before us is: What does honey contain? Normally an average honey contains fruit sugar (fructose), glucose, dextrose and maltose (malt sugar). It also contains various enzymes necessary for strengthening the body and digestion, organic acids, minerals and traces for chemicals which maintain harmonal balance and vitamins.

An ideal food for Yogi- Accordin to Charak Samhita "Honey is generally the aggravator of vata (wind) and the alleviator of rakta (blood) pitta (bile) and kapha (mucus). It promotes healing." It is why honey is recommended by adept seers and sages as an excellent food for such yog aspirants who are serious seekers of yog. Since it is absorbed directly into the blood stream eliminating the various stages of digestion, it keeps the stomach light. In the past, it was included in the traditional diet for yog sadhaks which included fruits, roots, milk and honey. For Yogis, a full glass of lemon juice with two spoonful of honey is a must. There are such energy giving properties in honey which give strength and stimulation to the whole system.

Honey as Medicine: Not only in India, honey has been used for medicinal purposes throughout the world for thousands of years. Much has been written on its utility both in Vedas and Ayurvedic texts.

First, it has a direct impact on the various systems of the body. Besides increasing the digestive capacity of the stomach, honey helps the glands produce the necessary harmones for digestion.

Secondly, It is highly beneficial in solving the problems such as hyperacidity. Three spoons of honey with orange or tomato juice taken regularly is the best remedy for relieving constipation.

Thirdly, It can safely be used for curing coughs, colds, tonsilites, sore throats and bronchitis. Pain and swelling can be reduced by mixing honey with apple juice and taking two or three spoonful four times daily.

Fourthly, honey is highly beneficial for heart and high blood pressure patients. By expanding the blood vessels, it not only helps the heart muscles work soothly but also assists in bringing down the pressure on the heart.

Fifthly,honey is highy useful for asthma patients as well as those wo suffer from liver and gallbladder disorders, arthritis and female problems.

Finally, honey relieves us of nervous disorders and general weakness; strengthens individual cells, including brain cells and sooths the body system as a whole. A table spoon of honey in hot water acts as a stimulant when one feels tired or exhausted.

पाठकों से निवेदन

यदि आपका 'कमल ज्योति' हेतु शुल्क अभी तक जमा नहीं हुआ है या समाप्त हो गया है तो कृपया अपना शुल्क आजीवन 1100/- रुपये की दर से 'कमल ज्योति' के नाम मनिआर्डर/क्रास चैक से कार्यालय, डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 के पते पर शीध्र भेजें ताकि पत्रिका आपको लगातार मिलती रहे। अपना नाम, निवास का पूरा पता, कोड नम्बर, फ़ोन तथा मोबाईल नम्बर आदि सुन्दर व साफ़ शब्दों में लिखने का कष्ट करें। धन्यवाद!

-प्रबन्धक

thearyasamaj.org

जीवन कल्याण का सही मार्ग

जब तक इस जीवन भेद को न जाना जाए तब तक सही कल्याण के मार्ग को समझना या इस पर चलना अधिक दुश्वार (कठिन) है। अज्ञानमयी जीवन या भोगमयी जीवन की तो सिर्फ ऐसी ही स्थिति जन्म से लेकर शरीर के विनाश होने तक बनी ही रहती है कि बड़े से बड़े ऐश्वर्य भोग प्राप्त करो और नित ही जीवन बना रहे। ऐसे भोग विकारों की चेष्टा जैसी भी जिस के अन्दर दृढ़ होती है, मसलन अधिक लोभ, अधिक मोह या अधिक क्रोध या अधिक अहंकार या अधिक काम, प्रबल रूप में एक न एक अवगुण हर एक के अन्दर मौजूद रहता है। इसी अवगुण की कैद में बुद्धि अपना संसार कायम करती है। यानि अधिक लोभ मौजूद हो तो धन माल को अधिक संचित करने में अधिक चतुर होता है। अधिक मोह हो तो वह मनुष्य अधिक परिवर की वृद्धि में लवलीन रहता है। अधिक क्रोध के अन्दर हो तो वह नाना प्रकार की तजवीजें दूसरों की हानि की सोचता है बहुत फरेबी और जल्लाद (हिंसक) तबीयत का होता है। अधिक अहंकार मौजूद हो तो वह मनुष्य अपनी सरकारी कायम करने की खातिर अधिक यत्न करता है। ऐसे ही अधिक काम चेष्ठा जिसके अन्दर बलवान होती है तो वह मनुष्य अधिक भ्रष्टाचारी और स्त्रियों का मुरीद होता है। ऐसे ही पशु भी इन विकारों की अग्नि में जलते रहते हैं। यह ही मादावाद या प्रकृतिवाद का जीवन चक्कर है। ऐसे ही भोगमयी जीवन को धारण करके जो यह कहे कि मैं दूसरों का कल्याण करूंगा, वह महज एक पशु ही है। क्योंकि उसने कल्याण तो अपनी पहले की नहीं और और मानसिक विचार के जेर असर होकर अपनी आदत को पूरा करना चाहता है, उससे दूसरों की कल्याण होनी महज एक ढोंग है जैसा कि आजकल के कई प्रकार के लीडर बनकर अपनी दर पर्दा आदत को पूरा करने की खातिर दूसरों को सबज बाग दिखा कर अनर्थ कर रहे हैं। यही जीवन असुरमयी है। इस किस्म के विकारमयी जीवन में कभी भी संसार में शान्ति नहीं हो सकती है। यह तो अपने अपने कपट को एक दूसरे पर ठोंसने का यत्न करते हुए अपने आन्तरिक दोषों में अधिक जल रहे हैं। शांति कहां है और किस तरह हो सकती है? अच्छी तरह से विचार करें।

इस भयानक खेदमयी जीवन के उल्ट आस्तिक-वाद और सत्वाद का मार्ग है जिस तरफ यत्न करने से प्रथम अपनी कल्याण होती है और फिर दूसरों की भी। उसी कल्याण का स्वरूप यह है कि जो बढ़ते हुए विचार अन्तर बाहिर जला रहे हैं उनसे सन्तोष प्राप्त होता है और बुद्धि बलवान होकर अपने अन्तर निष्काम त्याग को हासिल करती है जो सर्व कल्याण का स्वरूप है। ऐसे विचारमयी जीवन से जागृत होकर आत्ममयी जीवन की दृढ़ता धारण करनी चाहिए। ज्यों-ज्यों आन्तरिक सब दोष नाश को प्राप्त होते हैं। त्यों-त्यों यह ही देव मार्ग शान्ति को प्रकाशने वाला है। पहले अपनी कमजोरी और कामनाओं से पवित्र होना चाहिए। तब दूसरे की कमजोरियों और कामनाओं को पूर्ण करने में वह धीर पुरुष बलवान हो सकता है। यह थोड़ा सा विचार लिखा जाता है जिसे अच्छी तरह से समझकर के अपने आप को सही उन्नत करने का यत्न इख्तयार करें। यानि भोगवाद और नास्तिक वाद से पवित्र होकर के आत्मवाद के परायण होवें जो सर्व कल्याण स्वरूप है। अच्छी तरह से पुस्तकों का मुताल्या करें। तुम्हारे जैसे नौजवानों का जीवन देश व धर्म उन्नति के वास्ते होना चाहिए जो कि भविष्य और वर्तमान में एक रोशनी का काम दे। ईश्वर सत् बुद्धि अनुराग देवें।

अगर न होते दयानन्द

- आशा चड्डा

डेमी नदी का वह सुन्दर किनारा,
बसता जहाँ ग्राम टंकारा
न देता अगर हमें दयानन्द प्यारा,
तो क्या होता नजारा
न होता स्वराज्य रूपी सूर्यादय, न ज्ञान का प्रकाश होता
न वेदशास्त्र, न राम, न कृष्ण, न सत्य का विकास होता

मेरे देश का गौरव न गूँजता भूमण्डल में,
गुलामी की जंजीरों में जकड़ा भारत वर्ष होता।

चारों तरफ छली जाती नारी, हर तरफ बाल श्रम का शोषण होता,
न शान्ति, न अमन होता

चहकता न कोई पक्षी गगन में, सूना यह चमन होता
दुर्भाग्य हँसता हम पर, आरक्षण खिल्ली उढ़ाता।

सत्य विद्या ढूँढ़ती जगह पर छुपाने को,
संस्कृति कहती हाय बचालो, मुझे हाय बचालो,
न बिगाड़ी मेरी रूपरेखा सम्भालों मुझे सम्भालों मुझे,

बाल श्रम कहता हमें सम्भालों हमें संवारों,
न मसलों यह नन्ही कलियाँ इनमें ही बसता भारत है।

होता न हाथ ऋषिवर को वो, कौन बचाता इस आंडम्बरी
दुनिया से, न अन्धविश्वासों से मुक्ति पा सकते, न नवजीवन
व नवप्रेरणा से परिचय होता, तो क्या होता रे क्या होता।

अशान्त की ओढ़े चादर घूँघट के बीच रोती नारी,
अगर न होते ऋषिवर तो कैसे होती नारी चांद पर।

न दीन होता, न ईमान होता, वेहशी हर तरफ इन्सान होता,
न होती शुद्ध आत्मा न जीवन सफल होता
अगर न होते ऋषिवर तो यही होता बस यही होता।

thearyasamaj.org

ओ३म ध्वनि की महिमा

- अंजलि पुरी

हम रोज अपनी योग-साधना ओ३म् ध्वनि व गायत्री-मन्त्र उच्चारण से आरम्भ करते हैं। क्या यह हमारी धार्मिक आस्था का प्रतीक है या इसका कोई वैज्ञानिक आधार भी है?

ओ३म् ध्वनि का सभी सम्प्रदायों में महत्व है चाहे, वैष्णव हो, शैव हो या आर्यसमाजी। हमारे सभी वेद-मन्त्रों का उच्चारण भी ओ३म शब्द से प्रारम्भ होता है। जो ईश्वरीय शक्ति की पहचान है, परमात्मा का नाम है। अंग्रेजी में भी ईश्वर के लिए Omnipresent (सर्वव्यापी) शब्द का प्रयोग होता है। इसके पहले दो अक्षर भी o-m हैं, अत: ओम् शब्द ही ब्रह्म-स्वरूप है।

यह सिर्फ आस्था नहीं हैं। इसका वैज्ञानिक आधार भी है। खगोल-वैज्ञानिकों ने प्रमाणित किया है कि हमारे अन्तरिक्ष में पृथ्वी-मण्डल, सौर-मण्डल, सभी ग्रह-मण्डल तथा अनेक आकाश-गंगाएं लगातार ब्रह्माण्ड का चक्कर लगा रही हैं। साथ ही, अपनी धुरी पर भी तीव्र गति से घूम रही हैं। ये सभी आकाशीय पिण्ड 20 हजार मील प्रति सेकेण्ड की गति से अनन्त की ओर भागे जा रहे हैं जिससे लगातार एक विशेष कंपन, एक ध्वनि या शोर उत्पन्न हो रहा है। इसी गूंज को या ध्वनि को हमारे ऋषियों ने अपनी ध्यानावस्था में सुना। इसे 'ब्रह्मनाद' कहा। यानि अंतरिक्ष में होने मधुर-गीत 'ओ३म्' ही अनादि काल से अनन्तकाल तक ब्रहाण्ड में व्याप्त है। संसार की समग्र वस्तुओं का मूलरूप भी ध्वनि है।

वायुमण्डल में उत्पन्न कोई भी ध्वनि कभी समाप्त नहीं होती। यही कम्पन या तरंगे हमारे जीवन में प्राण बनकर निवास करती है, जिसके अनेक लाभ हैं। ओ३म् शब्द का उच्चारण करने से समग्र ज्ञानेन्द्रियां, कर्मेन्द्रियां, मन सहित एकाग्र व अर्न्तमुखी होती हैं। मस्तिष्क की सुप्त-शक्तियां जागृत होती हैं। श्रद्धा से किया गया नमन चेतना को जागृत करता हैं। ओम् शब्द दिव्य शक्तियों का महासागर है।

इसका हमारे शरीर पर भी लाभकारी प्रभाव पड़ता है। यह शब्द तीन अक्षरों एवं दो मात्राओं से मिलकर बना है, जो वर्णमाला के सारे अक्षरों में व्याप्त हैं। अत: यह ध्वनि सभी शब्दों एवं आकारों का प्रतीक है।

(1) पहला शब्द-'अ' जो कंठ से निकलता है।

(2) दूसरा शब्द-'उ' जो हृदय को प्रभावित करता है।

(3) तीसरा शब्द-'म्' जो नाभि में कम्पन करता है।

इस ध्वनि के गुंजन का हमारे शरीर की 72 करोड़ से अधिक नस-नाड़ियों पर प्रभाव पड़ता है, विशेषकर मस्तिष्क, हृदय व नाभि में कम्पन होने से उनमें से जहरीली वायु तथा कफ अवरोध दूर होते हैं, जिससे हमारी समस्त नाड़ियां शुद्ध होती हैं। अत: ओम् ध्वनि सभी रोगों व पापों का नाश करती हैं, जो सभी के लिए मंगलरूपी, कल्याणकारी परमात्मा का स्वरूप है।

श्रद्धानुसार ओम् ध्वनि को हम लम्बी से लम्बी एवं छोटी से छोटी कर सकते हैं। किसी भी ध्वनि का प्रभाव तभी उत्पन्न होता है, जब उसे विशेष लय व श्रद्धा के साथ व्यक्त किया जाए। ओम् ध्वनि करते हुए स्वर की मधुरता तथा उच्चारण की शुद्धता पर अवश्य ध्यान दें। इसका उच्चारण भी तभी सार्थक होगा, जब हमारे विचार शुद्ध होंगे, भावना शुद्ध होगी।

जितना ईश्वरीय स्वरूप पर हमारा विश्वास दृढ़ होगा, उतनी ही प्रभु की निकटता प्राप्त होती है। हृदय की अन्तरात्मा से आत्म-विभोर होकर की गई ओ३म् ध्वनि हमारे जीवन को हमारी साधना को सार्थक करती है।

शिक्षक सम्मान 2014

सह संयोजक समिति पब्लिक स्कूल (रजिस्टर्ड) द्वारा महाराजा अग्रसेन आदर्श पब्लिक स्कूल डी.यू. ब्लॉक पीतम पुरा की प्रधानाचार्या श्रीमती हर्ष आर्या जी को शिक्षा के क्षेत्र में उनके बहुमूल्य योगदान के लिए 'इंडिया इन्टरनेशनल सेन्टर नई दिल्ली' में आयोजित समारोह में शिक्षक दिवस पर एक समारोह में 14 सितम्बर को 'शिक्षक सम्मान 2014' से विभूषित किया गया। जल संसाधान नदी विकास और गंगा सफाई मंत्री सुश्री उमा भारती जी के करकमलों द्वारा श्रीमती हर्ष आर्या जी को सम्मान के प्रतीक के रुप में एक स्मृति-चिन्ह, शाल व प्रमाण पत्र भेंट किया गया तथा जीवन पर्यन्त शिक्षा व समाज के लिए किए गए उनके प्रयासों को सभी गणमान्य अतिथियों द्वारा सराहा गया।

thearyasamaj.org

स्वामी श्रद्धानन्द

स्वामी श्रद्धानन्द का जन्म तलवन (जालन्धर) में एक सम्भ्रान्त परिवार में हुआ। पूर्व नाम मुंशीराम था। पिता पुलिस में उच्च पद पर थे। आरम्भिक जीवन उत्तर प्रदेश में व्यतीत हुआ। वहां ही शिक्षा हुई। पाश्चात्य प्रभाव और कुसंग के कारण धार्मिकता व आस्तिक्ता लुप्त हो गई। जीवन में कई चारित्रिक दोष आ गए। बरेली में महर्षि दयानन्दके साक्षात्कार और उनके उपदेश से काया पलट गई।

स्वामी श्रद्धानन्द सच्चे अर्थो में दयानन्द के उत्तराधिकारी थे। ऋषि ने जो सिद्धान्त, विचार, आदर्श, उद्देश्य आदि दिए, उन्हें स्वामी श्रद्धानन्द ने व्यावहारिक रूप में क्रियान्वित किया। स्वामी जी की अपने गुरु ऋषि दयानन्द के प्रति श्रद्धा, निष्ठा तथा समर्पण प्रशंसनीय एवं अनुकरणीय है। स्वामी श्रद्धानन्द त्याग, सेवा, बलिदान की प्रतिमूर्ति थे। उन्होंने जो ऐतिहासिक राष्ट्रीय तथा समाज निर्माण व उत्थान के कार्य किए हैं, वैसे आज तक कोई नहीं कर सका है। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन संघर्षो, कठिनाइयों और चुनौतियों में निकला। किन्तु उस वीर कर्मयोगी योद्धा ने चरैवेति-चरैवेति के मूल मन्त्र को कभी नहीं छोड़ा। जो उन्होंने कहा उसे कर दिखाया। उनकी करनी और कथनी में एकरूपता थी। उनकी शिक्षा, समाजसुधार, राजनीति, राष्ट्रीय चेतना, शुद्धि, संस्कृत, संस्कृति, वैदिक धर्म प्रचार-प्रसार आदि सभी क्षेत्रों में महत्वपूर्ण योगदान रहा है। उनके जीवन के प्रेरक स्मरणीय तथा ऐतिहासिक कुछ कार्य इस प्रकार हैं।

- जलियाँवाला हत्याकाण्ड में हजारों निर्दोष व्यक्तियों की नृशंस हत्या हुई। किसी भी नेता की वहां जाने की हिम्मत नहीं हुई। स्वामी जी ने कांग्रेस का सम्मेलन आयोजित किया। स्वागताध्यक्ष बने। हिन्दी में स्वागत भाषण दिया। यह कार्य उनका अभूतपूर्व था।

- स्वामी श्रद्धानन्द ने रौलेट एक्ट के विरोध में चांदनी चौक में विशाल जलूस का नेतृत्व किया। जब जलूस चांदनी चौक के टाउन हाल पर पहुंचा, तो गोरखा सैनिकों ने जलूस पर संगीनें तान दीं, तो स्वामी जी ने अपना सीना खोलकर निर्भीकता से कहा-'लो मैं खड़ा हूं, गोली मारो। सैनिकों की संगीनें झुक गई। इस घटना से स्वामी जी का कद ऊंचा हो गया। हिन्दू जाति में नवचेतना और एकता का भाव जागृत हुआ।

- स्वामी श्रद्धानन्द ने स्त्री शिक्षा के द्वार खोलकर क्रान्तिकारी कार्य किया। जालन्धर में कन्या पाठशाला की स्थापना करके नारी शिक्षा को आगे बढ़ाया। लड़कियों को पढ़ने के लिए प्रेरित किया।

- स्वामी जी ने अपना सर्वस्व लगाकर विश्व प्रसिद्ध गुरुकुल के लिए अपना घर छोड़ा, अपने दोनों पुत्रों को गुरुकुल में प्रवेश कराया। अपना सब कुछ गुरुकुल के लिए दाव पर लगा दिया। उन्होंने गुरुकुल शिक्षा-पद्धति का पुनरूद्धार किया। यह कार्य स्वामी जी का युगों तक स्मरणीय और वन्दनीय रहेगा। गुरुकुल कांगड़ी स्वामी श्रद्धानन्द का जीवन्त स्मारक है। गुरुकुल की सभी भारतीय और पाश्चात्य विद्वानों ने प्रशंसा की है।

- स्वामी श्रद्धानन्द शुद्धि-आन्दोलन के पुरोधा थे। उन्होंने शुद्धि सभा और दलितोद्धार के माध्यम से हिन्दुओं को संगठित किया। स्वामी जी शुद्धि कार्य को घर वापिसी मानते थे। 'जो लोग किन्हीं कारणों से विधर्मी हो गए है उन्हें अपना लो, उनके लिए द्वार खोल दो। तभी हिन्दू जाति संगठित रह सकती है। यह शुद्धि आन्दोलन ही स्वामी जी के बलिदान का कारण बना। स्वामी जी ने राष्ट्रीय, सामाजिक, धार्मिक, सांस्कृतिक, राजनैतिक आदि सभी क्षेत्रों में क्रान्तिकारी और ऐतिहासिक कार्य किए हैं। जो सदा प्रेरणा संदेश और आदर्श देते रहेंगे।

- **अमर बलिदान**- 23 दिसम्बर 1926 को एक मदान्ध धर्मान्ध मजहबी युवक स्वामी जी से मिलने आया। स्वामी जी कई दिनों से बीमार चल रहे थे। उसने पानी पीने के लिए मांगा। सेवक पानी लेने के लिए गया। तब तक उस मजहबी पागल युवक ने स्वामी जी पर पिस्तौल से गोलियां चला दी। वे वीरगति को प्राप्त हो गये। स्वामी जी की शवयात्रा नया बाजार से होकर खारी बावली, चांदनी चौक, टाऊनहॉल, सीसगंज होती हुई यमुना के तट पर पहुंची। इसी दिन के याद में प्रति वर्ष बड़ी धूमधाम से श्रद्धानन्द बलिदान दिवस मनाया जाता है। विशाल शोभा यात्रा निकलती है। बाद में शोभायात्रा श्रद्धांजलि के रूप में बदल जाती है। स्वामी जी का संपूर्ण जीवन वैदिक धर्म के प्रचार एवं प्रसार में व्यतीत हुआ। उनका बलिदान भी वैदिक धर्म के प्रचार में अन्तिम आहूति था। स्वामी जी सारा जीवन वीर की तरह जीए और वीर की तरह ही शानदार मृत्यु को प्राप्त हुए। उनका संपूर्ण जीवन प्रेरणाप्रद है।

धर्म, संस्कृति एवं स्वास्थ्य की मासिक पत्रिका

कमल ज्योति

डी-796, सरस्वती विहार,
दिल्ली-110034

अपने जीवन की शारीरिक, मानसिक एवं आत्मिक उन्नति के लिए 'कमल ज्योति' पत्रिका अवश्य पढ़े और इष्ट मित्रों को भी पढ़ाएं। सदस्य बनें और बनाएं।

thearyasamaj.org

25 दिसम्बर- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा की सुन्दर झलकियां

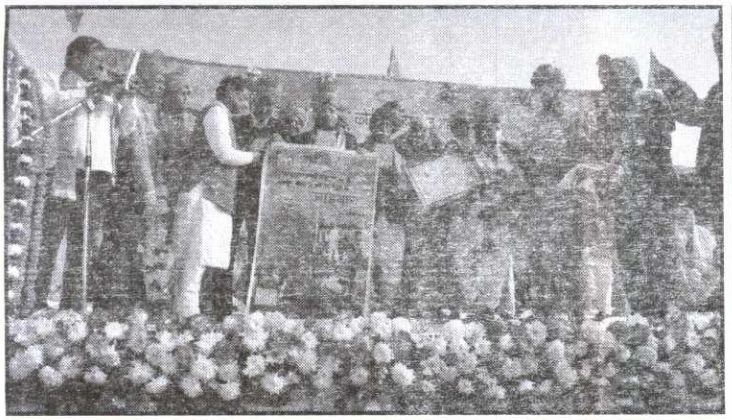

thearyasamaj.org

25 दिसम्बर- स्वामी श्रद्धानन्द बलिदान दिवस शोभा यात्रा की सुन्दर झलकियां

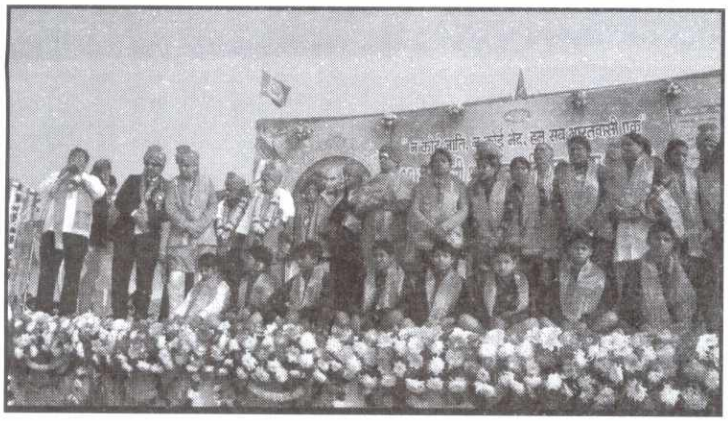

thearyasamaj.org

ब्र. राजसिंह आर्य जी का आकस्मिक निधन

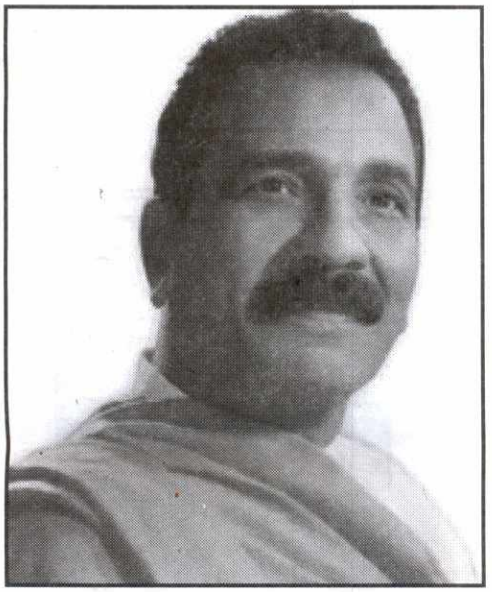

अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला के जनक एवं संयोजक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अहम पदाधिकार, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अनथक कार्यकर्ता, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के उपप्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के 12 वर्षो तक प्रधान पद की जिम्मेदारी संभालने वाले युवा वैदिक विद्वान, आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ आर्यनेता, प्रेरक ब्र. राजसिंह आर्य जी का आकस्मिक निधन देश-विदेश से शोक संवेदनाएं व सम्पूर्ण आर्य जगत् में शोक की लहर। नेत्रदान का संकल्प पूर्णकर दो आँखों को दी नई दुनिया।

5 जनवरी 2015 की सुबह आर्यसमाज के एक देदिप्यमान नक्षत्र सारा जीवन आर्यसमाज के प्रति समर्पित करने वाले आर्यसमाज के सुप्रसिद्ध वैदिक विद्वान, प्रवक्ता, कर्मठ, आर्यनेता को हमसे छीनकर ले गई। अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महा सम्मेलनों की वर्तमान श्रृंखला के जनक एवं संयोजक, सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के अहम पदाधिकारी, सार्वदेशिक आर्य वीर दल के अनथक कार्यकर्ता, आर्य विद्या सभा गुरुकुल कांगड़ी के उप प्रधान एवं दिल्ली आर्य प्रतिनिधि सभा के 12 वर्षों तक प्रधान पद की जिम्मेदारी संभालने वाले युवा वैदिक विद्वान, आर्यजगत् के विख्यात कर्मठ आर्यनेता, प्रेरक ब्र. राजसिंह आर्य जी का 5 जनवरी 2015 को हृदय गति रूक जाने के कारण राममनोहर लोहिया अस्पताल में दोपहर लगभग 12:30 बजे निधन हो गया। वे 61 वर्ष के थे।

आर्यसमाज की ओर से स्मृति में शान्ति यज्ञ एवं श्रद्धांजलि सभा रविवार 11 जनवरी को दोपहर 2-4 बजे एस.एम. आर्य पब्लिक स्कूल, पंजाबी बाग, पश्चिम, नई दिल्ली-26 में सम्पन्न हुई। सार्वदेशिक आर्य प्रतिनिधि सभा के तत्त्वावधान में ब्र. राजसिंह आर्य के संयोजन में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन 2006 के सफल आयोजन के बाद महासम्मेलनों की ऐसी श्रृंखला आरम्भ हुई, जिसने सम्पूर्ण विश्व में वैदिक धर्म के अनुयायियों को एक मंच पर एकत्र करने का प्रयास किया। उन्होंने अनेक विदेश यात्राओं के माध्यम से आर्य समाजों, आर्य प्रतिनिधि सभाओं तथा आर्यजनों से सम्बन्ध स्थापित किए तथा उन्हें सम्मेलन में आमन्त्रित किया। उन्हीं के सफल संयोजन में अन्तर्राष्ट्रीय आर्य महासम्मेलन-2012 में पुनः दिल्ली में आयोजित हुआ और अपार सफलता के साथ सम्पूर्ण विश्व को वसुधैव कुटुम्बकम एवं कृण्वन्तो विश्वमार्यम् का सन्देश दिया।

- विनय आर्य

नारियल का वृक्ष

एक व्यक्ति ने एक मुनि से पूछा 'महाराज! नारियल आदि के वृक्ष अन्य वृक्षों की अपेक्षा अधिक ऊंचे कैसे होते हैं। ऐसा क्यों?'

मुनि ने कहा, 'वत्स नारियल के वृक्षों का अन्य वृक्षों की तुलना में अधिक ऊंचा होने का कारण है-(1) नारियल आदि के वृक्षों में एकाग्रता का होना, (2) निर्धारित लक्ष्य। अन्य वृक्ष किसी भी दिशा में उठने हेतु तत्पर रहते हैं। ऐसे वृक्षों का अपना कोई निर्धारित लक्ष्य नहीं होता, जबकि नारियल आदि के वृक्षों का मात्र एक लक्ष्य है और वह है उनका सर्वाधिक ऊंचा उठाना, बुलंदियां छूना।

शिक्षाः एकाग्रचित होकर अपने लक्ष्य को प्राप्त करने में सारी शक्ति लगा देना ही बुद्धिमत्ता है, सफलता-प्राप्ति का अचूक उपाय है।

अनमोल वचन

उनकी सहायता करो जो बीमार, असहाय, निर्धन, अज्ञानी या मोक्ष पाना चाहते हैं अथवा तुम्हारा प्रेम पाना चाहते हैं।

thearyasamaj.org

RNI No.DEL BIL/2008/25452 Total Pages 12 ओ३म् Posting Date 5 or 6 Feb. 2015 DL (N)0225/2015-17

प्रेषक Date of Publication: 25 January 2015

कमल ज्योति

फरवरी 2015 (मासिक) एक प्रति का मूल्य 10 रुपये

डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034,

फोन : 27017780

सेवा में

हमारे प्रेरणा स्त्रोत

इनकी पुण्य स्मृति सदैव बनी रहेगी

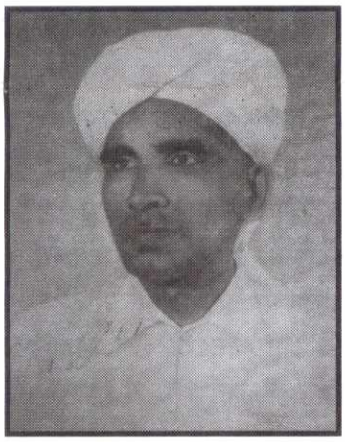

स्व. पूज्य दादा मूलचन्द जी

(16.12.1907-12.02.1963)

को शत्-शत् नमन

आपके उच्च आदर्श, मार्गदर्शन व मानव मूल्यों के प्रति जागृति हमारे लिए निरन्तर प्रेरणा के स्रोत बने रहेंगे।

परिवार के सभी सदस्य, सम्बन्धी, मित्रगण एवं प्रशंसक

–अतुल आर्य

पावन स्मृति

श्रीमती कमला आर्या जी

(01.12.1940-24.02.2006)

त्याग के पथ पर बढ़ाए थे कदम
धर्म सेवा का तुम्हें भाया बहुत था।
लगन से हर काम को अंजाम देना,
बन गई आदत उसे तजना कठिन था।
मधुर वाणी से दिलों को जीतने का,
पा लिया था हुनर शायद बालपन से
घोर विपदा में भी हंसना मुस्कराना
चकित हैं सब आ गया तुम को कहां से
यज्ञ की पावन सुरभि से दान से
घर पधारे बन्धुओं के मान से
तुम ने दी थी सद्गुणों की प्रेरणा
जागरित घर-घर में हो सद्भावना
आज कमला जी! तुम्हें शत शत नमन
मधुर स्मृतियां शेष जो उनको नमन

–ओम् प्रकाश ठाकुर एवं परिवार,
757, सरस्वती विहार, दिल्ली

माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट एवं 'कमल ज्योति' परिवार के सभी सदस्य

स्वामी-माता कमला आर्या स्मारक ट्रस्ट (रजि.) के लिए मुद्रक, प्रकाशक तथा सम्पादक एल.आर. आहूजा, चलभाष : 9810454677 द्वारा मयंक प्रिन्टर्स, 2199/64, नाईवाला, करौलबाग, नई दिल्ली-5, दूरभाष : 41548504 मो. 9810580474 से मुद्रित। कार्यालय : डी-796, सरस्वती विहार, दिल्ली-110034 से प्रकाशित